मसीही पति

फ्रैंकलीन द्वारा तैयार नोट्स

मसीही पति

" जागते रहो, विश्वास में स्थिर रहो, पुरुषार्थ करो और शक्तिशाली बनो। जो कुछ करो, प्रेम से करो।"
1 कुरिन्थियों 16:13 –14 ।।

परमेश्वर के जन की आठ मूलभूत विशेषताएं

क. वह आत्मिक अगुवा है।

i) पहला और सर्वप्रथम अपने परिवार का

1 तीमुथियुस 3:4–5 "यदि कोई व्यक्ति अपने ही घर का प्रबन्ध करना नहीं जानता, तो वह परमेश्वर की कलीसिया की देखभाल कैसे करेगा?

कुछ अनुवादों में "प्रबन्ध" के बजाय "शासन" का प्रयोग किया गया है। युनानी मूल शब्द का अर्थ : "आगे खड़ा होना" है। यह "अगुवे" का अभिप्राय देता है।

पुरुष की पहली सेवकाई अपनी पत्नी के लिए
और फिर अपने बच्चों के लिए है।

ii) उदाहरण : नूह इब्रानियों 11:7 जहाज़ का बनाना

★ विश्वास से नूह ने आज्ञा मानी
इब्रानियों 11:7 रोमियों 10:17 उत्पत्ति 6:9

★ उसे चेतावनी दी गई :
उत्पत्ति 6:11–13 2 तीमुथियुस 3:1–5 मत्ती 24:3, 7, 9–14, 37

★ भय के साथ अय्यूब 1:1,5 नीतिवचन 16:6 ; 8:13

★ एक नाव बनाई (शाब्दिक : एक सन्दूक; एक पवित्र सन्दूक; या खज़ाने की पेटी) **खज़ाने की पेटी** वो है जहां आप अपने सबसे मुल्यवान अमानत रखते हैं।
1 कुरिन्थियों 3:9, 10–11, 12–13, 14–15
नीतिवचन 24:3–5

★ उसके परिवार का उद्धार लूका 11:21–22

iii) परिवार का मुख्या – परमेश्वर द्वारा दिया गया स्थान
1 कुरिन्थियों 11:3

iv) एक सेवक मरकुस 10:43 – 45

v) एक शिक्षक व्यवस्थाविवरण 6:6 – 9 इफिसियों 6:4
नीतिवचन 13:24; 22:6,15 ; 23:12 ; 19:18 ; 29:15, 17

vi) दर्शनार्थी पुरुष नीतिवचन 29:18 अपने बच्चों की सहायता करें कि वे अपने जीवन के उद्देश्य को पहिचाने तथा सम्पूर्ण अन्तःशक्ति द्वारा उसे पूरा करे।

ख. वह पुरुष जिसका वह (स्त्री) आदर करे तीतुस 1:6 – 10

आदर की मांग नहीं की जा सकती, यह पत्नी, बच्चों व अन्यों से अर्जित की जाती है।

i) प्रभु से प्रेम करने वाला – प्रार्थना करने वाला पुरुष

ii) परमेश्वर के वचन से प्रेम करने वाला – बाइबल अध्ययन भजन संहिता 1

iii) पवित्र आत्मा से भरा हो इफिसियों 5:18

iv) आत्मा के द्वारा चलाए चलता हो गलातियों 5:18

v) उसके जीवन में आत्मा का फल हो गलातियों 5:19–25

vi) ईश्वरीय स्वभाव का सहभागी 2 पतरस 1:4–11

ग. वह पुरुष जो अपनी पत्नी से प्रेम करता है।

"हे पतियों अपनी अपनी पत्नियों से प्रेम करो जैसे मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम किया और अपने आपको उसके लिए दे दिया। इफिसियों 5:25

प्रेम देता है / बलिदान यीशु का उदाहरण : फिलिप्पियों 2:5–8

i) यीशु ने अपनी दुलहन के साथ एक वाचा स्थापित की।
प्रभु परमेश्वर वाचा करने और रखने वाला परमेश्वर है। यशायाह 54:10

बाइबल में परमेश्वर ने आठ वाचाऐं की।

उसने वाचा में प्रवेश किया :

- ★ शर्तें या प्रतिज्ञाओं की सहमति के द्वारा : विश्वास / भरोसा
- ★ लहू के बहाए जाने के द्वारा उत्पत्ति 15:9 से आगे
- ★ वाचा के चिन्हों के द्वारा उत्पत्ति 9:12 इन्द्रधनुष 15:7 भूमि/अंगूठी

- ★ नाम बदलने के द्वारा उत्पत्ति 17:5
- ★ **दो जन के एक हो जाने** /सह – उत्तराधिकारी बन जाने / एक साथ खड़े रहने, काम करने के द्वारा।

विवाह वाचा है तथा यह उसी प्रकार और क्रम में है जैसा परमेश्वर ने अपने वचन में बताया।(उपरोक्त)

मलाकी 2:14 ''इसलिए कि यहोवा तेरे और तेरी जवानी की पत्नी के बीच साक्षी है। यद्यपि वह तेरी जीवन संगनी और ब्याही हुई पत्नी है, तूने उसके साथ विश्वासघात किया है।''

''वाचा'' शब्द का इब्रानी भाषा में अर्थ है : ''काटना'' इस कारण लहू।

- ★ यीशु मसीह के द्वारा अपनी दुल्हन, कलीसिया, के साथ बनाई वाचा पर आधारित।

❖ यौन प्रक्रिया लहू वाचा बनाए जाने की क्रिया है।

❖ परमेश्वर ने स्त्री के शरीर की रचना इस प्रकार से की है कि प्रथम सहवास लहू वाचा बनाने की क्रिया बन जाती है (जब योनिच्छद टुटती है तो लहू की थोड़ी मात्रा बहती है)।

- ★ विवाह पूर्व सम्बन्ध और व्यभिचार वाचा को दूषित करते हैं। निर्गमन 20:14
- ★ प्रेरणा वासना नहीं प्रेम है।

वाचा की **सामग्री** :

- ★ बलिदान – अपने प्राण दे दिये। इफिसियों 5:25
- ★ विश्वासयोग्यता – ''मैं तुझे कभी नहीं छोड़ूंगा ... '' इब्रानियों 13:5
- ★ प्रबन्ध – ''ये सब वस्तुएं तुम्हें दे दी जाएंगी '' मत्ती 6:33
- ★ सुरक्षा – ''कोई तुम्हें हानि नहीं पहुंचाएगा।'' लूका 10:19
- ★ सम्पत्ति – ''सह – उत्तराधिकारी'' रोमियों 8:17

ii) वाचा का परिणाम : 1 कुरिन्थियों 6:17

उत्पत्ति 2:24 ''इस करण पुरुष (1)अपने माता पिता को छोड़ कर (2)अपनी पत्नी से **मिला** रहेगा, और वे एक ही तन बने रहेंगे।''

➢ मिला रहना (इब्रानी – दाबाग) का अर्थ : चिपके या लिपटे रहना, बन्धे हुए।

मसीही पति

मत्ती 19:5 ''''इस करण पुरुष (1)अपने माता पिता को छोड़ कर (2)अपनी पत्नी से **मिला** रहेगा, और वे दोनो एक ही तन होंगे।''

- ➢ मिले रहना (युनानी : कोलाओ) : एक साथ चिपक जाना, इकट्ठे जुड़ जाना।

मत्ती 19:6 ''फलतः अब वे **दो नहीं**, परन्तु **एक** तन हैं। इसलिए जिस परमेश्वर ने जोड़ा है(इकट्ठा जोड़ा), उसे **कोई मनुष्य अलग न करे।**

कदमः

1. छोड़ना पृथक् हो जाना / हट जाना / अलग होना

पुरुष अपनी पत्नी की आवश्यकताओं को उठाने के लिए सक्षम व परिपक्व होना चाहिए। तभी वह वचनों के अदान – प्रदान, नाम बदलने और वाचा की क्रिया के द्वारा विवाह की वाचा में प्रवेश करे।

2. मिलना या जुड़ना स्थायी / जैसे हड्डी से चमड़ी जुड़ी रहती है / इकट्ठे जुड़ जाना/ चिपक जाना।

विज्ञान ने यह सिद्ध किया है कि यौन प्रक्रिया के दौरान शक्तिशाली हारमोन निकलते हैं जो वास्तव में दो व्यक्तियों के बीच "जुड़ जाने" के अनुभव को बनाता है।

- ➢ किसी अन्य व्यक्ति के साथ सम्बन्ध बनने से, दम्पति का बन्धन दूषित हो जाता है और क्षीण पड़ जाता है। एक मानसिक/भावनात्मक/शारीरिक बन्धन के बजाय यदि दो या अधिक हों तो मानसिक और भावनात्मक बन्धन या बन्धनों में फीकापन आ जाता है।
- ➢ विवाह पूर्व सम्बन्ध से मानसिक/भावनात्मक/शारीरिक बन्धन स्थापित होते हैं जो भविष्य में होने वाले विवाह सम्बन्ध को कमज़ोर व फीका कर देते हैं।

अ. एक तन का अर्थ :

- ★ मनुष्य तीन भाग प्राणी है। 1 थिस्सलुनीकियों 5:23
- ★ आदम और हव्वा के पास पूर्ण एकत्व था : आत्मा – प्राण – देह
  वे एक थे इफिसियों 5:28
- ★ खुले / पारदर्शी / कोई लज्जा नहीं /निष्कपट
  सहमति में मत्ती 18:18–19

ब. इस सम्बन्ध की शक्ति को शैतान पहचान गया।

- ★ वह उसे नष्ट करने निकल पड़ा। वह उनका अधिकार चाहता था।
- ★ आज भी हर सम्भव तरीकों से (जैसेः अश्लील तस्वीर व साहित्य इत्यादि) वह विवाह की पवित्रता को नष्ट कर देना चाहता है।
- ★ जिससे प्रभु सबसे अधिक प्रेम करते हैं, उसी को शैतान नष्ट कर देना चाहता है।

- उत्पत्ति 3:7 आत्म केन्द्रित बन गए। एक दूसरे से छिप गए, ढांप लिया। **आज भी ऐसा ही है।**
- उत्पत्ति 3:8 परमेश्वर से छिप गए जिसका विवाह में होना आवश्यक है। **आज भी ऐसा ही है।**
- उत्पत्ति 3:12 शत्रु को पहिचानने में भूल की और अपने पाप की सफ़ाई दी। **आज भी ऐसा ही है।**
- उत्पत्ति 4:1 केवल शारीरिक मिलन ही रह गया।

3. यीशु मसीह प्रारंभिक स्तर को पुनःस्थापित तथा पुनःप्राप्त करने के लिए आए।

★ छुड़ाए जाने से पहले :

हृदय की कठोरता के कारण तलाक अनुमत था।
यीशु हमारे कठोर हृदयों को बदलने के लिए आए। यिर्मयाह 32:39

★ आरंभिक योजना में अलगाव या तलाक सम्मलित नहीं था।

अपने शिष्यों से बात करते हुए, यीशु तलाक प्राप्त करने के किसी भी बहाने को स्वीकृति नहीं देते, जिससे वाचा टूटे। सिवाय "सिवाय व्यभिचार के" जो वाचा को तोड़ता है।

मत्ती 19:3–9 "फिर कुछ फरीसी उसकी परीक्षा करने के लिए उसके पास आए और कहने लगे, "क्या पुरुष के लिए अपनी पत्नी को किसी कारण से तलाक देना उचित है?" (4) उसने उत्तर दिया,

(7) उन्होंने उससे कहा, "तो फिर मूसा ने क्यों आज्ञा दी कि उसे तलाक – पत्र देकर त्याग दे?" (8) उसने उससे कहा,

➢ प्रभु का दृष्टिकोण यह है :

➢ यह उनके इस प्रशन की प्रतिक्रिया में है, पद 7 "तो फिर मूसा ने क्यों आज्ञा दी कि उसे तलाक – पत्र देकर त्याग दे?" प्रभु समझाते हैं कि यह "मन की कठोरता" के कारण आज्ञा दी गई। और फिर वह आगे बताते हैं कि आज के तलाक का "सिवाय व्यभिचार" को छोड, जो कि विवाह की वाचा को दूषित करती है, कोई अन्य कारण नहीं होना चाहिए।

➢ इससे पहले "मन की कठोरता" का ज़िक्र आता, प्रभु किसी अन्य कारण का ज़िक्र नहीं करते जिसकी अनुमति मूसा ने दी थी, जिस प्रकार हम बाद के पदों में भी पढ़ते हैं। यह सब मूल उद्देश्य की ओर संकेत करते हैं। केवल मत्ती में हम "अपवादात्मक वाक्यांश" पाते हैं।

मरकुस भी इसी परिच्छेद का वर्णन करता है परन्तु उसमें "अपवादात्मक वाक्यांश" सम्मिलित नहीं है।

मरकुस 10:11 –12 उसने उससे कहा,

लूका 16:18

रोमियों 7:1–4 ''हे भाइयों, क्या तुम नहीं जानते – मैं व्यवस्था जानने वालों से कह रहा हूं – कि जब तक मनुष्य जीवित है, तब तक उस व्यक्ति पर व्यवस्था का अधिकार रहता है?(2) क्योंकि विवाहिता स्त्री, अपने पति के जीवित रहते, व्यवस्था से बन्धी हुई है; परन्तु यदि उसके पति की मृत्यु हो जाए तो वह उस पति से सम्बन्धित व्यवस्था से मुक्त हो जाती है।(3) इसलिए, यदि वह अपने पति के जीवित रहते हुए किसी दूसरे की हो जाए तो व्यभिचारिणी कहलाएगी; परन्तु यदि उसके पति की मृत्यु हो जाए तो वह इस व्यवस्था से मुक्त हो जाती है, यहां तक कि यदि वह किसी दूसरे पति की भी हो जाए, वह व्यभिचारिणी न कहलाएगी। (4) इसलिए मेरे भाइयों, तुम भी मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के प्रति मृतक बना दिए गए थे कि तुम उसके हो जाओ जो मृतकों में से जिलाया गया कि हम परमेश्वर के लिए फल लाएं।

यह तीन परिच्छेद परमेश्वर के ''असली नमूने'' तथा उद्देश्य को बताते हैं जो उच्च मापदण्ड पर हैं जिसे हमें प्राप्त करना है।

फिर भी – हमारे हृदयों की दशा के कारण, पौलुस अपनी सलाह देता है (जिस प्रकार मूसा ने अनुमति दी) कि यदि तुम्हारा साथी तलाक – पत्र प्राप्त कर लेता है, तब तुम विवाह करने के लिए मुक्त हो।

1 कुरिन्थियों 7:25–29 ''अब, कुंवारियों के सम्बन्ध में, प्रभु की ओर से मुझे आज्ञा नहीं मिली। परन्तु प्रभु की दया से विश्वासयोग्य होने के कारण, मैं अपनी सम्मति देता हूं। (26) मेरे विचार से वर्त्तमान कठिन परिस्थिति में पुरुष के लिए यही अच्छा है कि वह जिस दशा में है उसी में रहे। (27) क्या तेरे पास पत्नी है? उससे मुक्त होने का प्रयत्न न कर। क्या तेरे पास पत्नी नहीं? तू उसकी खोज न कर। (28) परन्तु यदि तू विवाह करे तो पाप नहीं करता। यदि कुंवारी ब्याही जाए, तो पाप नहीं करती। फिर भी ऐसों को इस जीवन में कष्ट होगा, और मैं तुम्हें बचाना चाहता हूं।

घ. पति जो अपनी पत्नी के साथ ''रहता'' है 1 पतरस 3:7

- ✎ ''साथ रहना'' / इकट्ठे जीवन बिताना / अलग नहीं
- ✎ वह आपके कपड़े धोने, खाना बनाने वाली नौकरानी नहीं।

लूका 4:18 एक साथ जीवन बिताना चंगाई लाता या पूर्ण बनाता है / छुटकारा देता है।

i) ग्रहण (विरुद्ध : त्याग) जब हम पापी ही थे ... उसने हमें चुना !

ii) स्वीकृति (विरुद्ध : अस्वीकृति) शब्द !!! आवाज़ का लहज़ा
मरकुस 10:21 उसे देख कर यीशु को प्यार आया।

iii) स्नेह (विरुद्ध : पीछे हटना) श्रेष्ठगीत
लूका 24:39 छूकर देखो
मरकुस 6:56 जितने उसे स्पर्श करते थे, वे चंगे हो जाते थे।

★ वास्तव में स्पर्श और व्यक्तिगत सम्पर्क, एक स्वीकृति का सन्देश भेजती है जिसकी आवश्यकता प्रत्येक को रहती है कि अपने खाली दिलों को भर सकें। हमारी पत्नियों और बच्चों में इस खालीपन को उसके पति या पिता द्वारा ही भरा जाना चाहिए और न कि बाद में किसी अन्य के द्वारा (जैसे डेट पर युवती को युवक के द्वारा)।

iv) मेल सही सम्बन्ध को पुनःस्थापित कर लें मत्ती 5:21 –24

v) क्षमा

1 कुरिन्थियों 13:5 ''प्रेम बुराई का लेखा नहीं रखता।''

1 पतरस 4:8 ''सबसे बढ़कर, एक दूसरे के प्रति प्रेम में सरगर्म रहो, क्योंकि प्रेम असंख्य पापों को ढांप देता है।''

परिभाषा : किसी को मुफ्त क्षमा कर देना, किसी के अपराध या कर्ज़ को भूल जाना।

किसी अन्य को अपराध के बारे में न बताएं नीतिवचन 17:9

क्षमा करना, परमेश्वर की आज्ञा है।

★ यदि हम क्षमा करते हैं – हम भी क्षमा किए जाते हैं।

★ क्षमा न करना हमें बन्धुवाई में खींचे रखती है मत्ती 18:23 –35

- शारीरिक और मानसिक रोग
- दुष्ट आत्माओं के गढ़ की जड़ भी हो सकते हैं।
- दोनो पक्षों पर अपना असर डालते हैं यूहन्ना 20:23

★ परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को रोकते हैं मत्ती 5:23 –24; मरकुस 11:25

★ हमारे क्षमा करने से पहले हमारी जीवन संगिनी का माफ़ी मांगना आवश्यक नहीं है।
- उदाहरण ; यीशु : लूका 23:34 स्तिफनुस : प्रेरितों के काम 7:60

★ कितनी बार हमें क्षमा करना है इसकी गिनती नहीं होनी चाहिए। मत्ती 18:22
- प्रेम गलतियों का लेखा नहीं रखता 1 कुरिन्थियों 13:5
  प्रेम असंख्य पापों को ढांप लेता है 1 पतरस 4:8
- यदि जीवन संगिनी बार बार वही गलती दोहरा रहा/रही है :
  क्षमा कर दें जैसे परमेश्वर करता है। यशायाह 43:25 ; भजन संहिता 103:12

★ क्षमा करना इच्छा का कार्य है भावनाएं बाद में आती हैं

★ आवश्यक है कि हम स्वयं को जांचें, न कि अपनी जीवन संगिनी को।

◆ आत्म धार्मिकता मत्ती 7:1 –5 लूका 6:37
छोटा और बड़ा पाप नहीं। परमेश्वर के लिए पाप पाप है। 1 यूहन्ना 2:4; 3:4
हम जिस पर दोष लगाते हैं, हम उसी के समान हो गए हैं।

◆ परमेश्वर के साथ संगति (निकटता) में बाधा : मत्ती 6:14–15
हम सफल नहीं होंगे नीतिवचन 28:13

◆ कड़वाहट इब्रानियों 12:15
हमें नष्ट कर देगा
दूसरों को प्रभावित करेगा
दूसरे पाप को जन्म देगा
हमारे ह्दय को कठोर करेगा
प्रेम को कुचल देगा और मार देगा

◆ दूसरे के अपराध को लेना
यह करना बहुत आसान है

◆ स्वयं के क्षमा करें

◆ दूसरों को क्षमा करें

ङ . पुरुष जो अपनी पत्नी को जानता व समझता है 1 पतरस 3:7

i) उसको (पत्नी को) समझने को प्रयत्न करें। उसे दिखाएं

★ सुरक्षा दें छिपा लें। रुत 3:9 उसे सहारा दें।

★ उसे ध्यान से सुनें। वह क्या कहना चाहती है।

★ संवेदनशील बनें – आत्मा, प्राण और देह

★ उसकी ताकत और कमज़ोरियों को जानें

★ उसकी योग्यताओं और मिले वरदानों को जानें

★ उसकी ओर अपने कान और अपनी बांहें बढ़ाएं न कि मुंह

ii) समझ रखने में आवश्यक है : सहमति

''यदि दो व्यक्ति आपस में सहमत न हों तो क्या वे साथ – साथ चल सकते हैं?'' आमोस 3:3 ।

पति और पत्नी के रुप में बिना सहमति के, शान्ति का आभाव रहता है। याकूब 3:16

★ शत्रु के आक्रमण के लिए द्वार खुल जाते हैं।

★ हमें परमेश्वर की इच्छा से दूर ले जाते है।

★ एक दूसरे पर दोष लगाने की ओर ले जाती है।
''मैंने तुमसे ऐसा पहले ही कहा था।''
''तुम हमेशा यही सोचते हो कि तुम ही सही हो।''

परमेश्वर के अनुसार सहमति। मत्ती 18:19 सहमति का अर्थ समन्वय है।

हमें सहमत होना है, अपनी इच्छा पर नहीं, परन्तु परमेश्वर की इच्छा पर।

परमेश्वर बात चीत करता है :

- अपने वचन के द्वारा
- प्रार्थना के द्वारा ''किसी भी बात के लिए ... मांगे ...'' मत्ती 18:19
  दोनों के लिए आवश्यक है कि उसकी सुनें लूका 11:10

नियम :

- जो समय सहमति में लगता है यह उस समय से कहीं अधिक कम होता है जो गलत निर्णय को सुलझाने में लग जाता है।

- सहमति पर पहुंचने में पति अगुवा है।

- यह निर्धारित कर लें कि बिना सहमति के आप कोई मुख्य निर्णय न लें।

सहमति पर पहुंचने के लिए गलत तरीके :

- संघर्षहीन
- विशेषज्ञ सलाह
- समझौता
- पति – पत्नी के बीच ताकतवर की विजय
- छल पूर्वक

- तर्क (पति) बनाम भावना (पत्नी)
- खुले द्वार तथा/ या बन्द द्वार

परमेश्वर की इच्छा को पृथ्वी पर लाना : ''तो वह मेरे स्वर्गीय पिता की ओर से उनके लिए पूरी हो जाएगी।'' मत्ती 18:19

- जब आपको परमेश्वर की इच्छा का निश्चय हो जाता है तब आप आत्मविश्वास में आगे बढ़ते हैं।

- यह सहायता करता है कि उसकी इच्छा इस जगत पर पूरी हो जाए।

- इस प्रकार सदा सहमति चाहने वाले दम्पति, जीवन की राह के समान अपना ध्यान परमेश्वर की इच्छा पर केन्द्रित करने लगेंगे।

च. पुरुष जो अपनी पत्नी का ''आदर'' करता है। 1 पतरस 3:7 ''उसका आदर करो''

i) सम्मान देना रानी शिष्टाचार जो कुछ वह मांगे

ii) उसे ''अव्वल नम्बर'' महसूस करने दें।

छ. पुरुष जो अपनी पत्नी का ''पालन – पोषण'' करता है।

इफिसियों 5:28 –30

पालन : जो मज़बूत बनाता है तथा सेहत और प्रसन्नता ले कर आता है

पोषण : उसके साथ बहुत ख़ास बरताव करें – चौकस, संवेदनशील, बचाए रखना।

उदाहरण : जिस प्रकार कोई व्यक्तिअपनी पुरानी बाइक की तुलना में नई बाइक की देखभाल करता है।

ज. पुरुष जो अंतरंग रुप से अपनी पत्नी से बात चीत करता है।

★ इफिसियों 5:26 'पवित्र बनाए' – अपने लिए अलग करना। सौभाग्यशाली अवस्था।

- वचन में सामर्थ्य है ! नीतिवचन 18:21 (मृत्यु और जीवन)
- हमारे शब्द उसके हृदय में बोए गए बीज के समान हैं। मत्ती 13:1, 19

यदि हम सही शब्दों को **बोयेंगे** तो हम निकटता **पाएंगे**।
यदि हम गलत शब्दों को **बोयेंगे** तो हम अलगाव **पाएंगे**।

★ बोना और काटना गलातियों 6:7–9

i) आत्मिक नियम

- प्राकृतिक नियम के समान – पूरा होगा
- अज्ञानता उसे फल लाने से नहीं रोक सकती
- हम फसल के लिए आश्वस्त हैं।
- हम वही काटेंगे जो हमने बोया है।

ii) बीज बोना याकूब 3:9–10

- बीज का चुनाव या तो परमेश्वर से या शैतान की ओर से

''आज मैं स्वर्ग और पृथ्वी को तुम्हारे विरुद्ध साक्षी ठहराता हूं कि मैंने तुम्हारे सामने जीवन और मृत्यु , और आशिष तथा शाप रखा है, अतः जीवन को चुन ले कि तू अपनी सन्तान सहित जीवित रहे।'' व्यवस्थाविवरण 30:19 –20 ।।

- यीशु हमेशा जीवन ही बोता है। वह जीवन है। यूहन्ना 14:6
- शैतान हमेशा मृत्यु बोता है। यूहन्ना 10:10
- कोई बीज मध्य का नहीं है
- हम हमेशा बोते रहते हैं ; इसलिए हम सदा काटते भी रहते हैं।
- जब कि हमारा नया जन्म हुआ है हमें यह निर्देश दिया गया है कि हम केवल जीवन देने वाला बीज ही चुनें। रोमियों 8:5
- पुरानी आदतों के कारण हम गलत थैली से बीज चुन लेते है।

iii) बीज के प्रकार जो हम बाते हैं

- शब्द ''हमारे बच्चे तो बहुत विद्रोही हैं।''
  ''हमारे बच्चों की इच्छा है कि परमेश्वर की आज्ञा मानें।''
  ''मैं यह नहीं कर सकता'' ''मसीह के द्वारा मैं सब कुछ कर सकता हूं...''
- व्यवहार नम्रता बनाम घमण्ड / कृतज्ञता बनाम कड़वाहट
- क्रिया ग्रहण करना या त्यागना / उदारता से देना या स्वार्थपूर्ण

iv) हम कैसे बोते हैं

- हम हमेशा बो रहे हैं – अपने जीवन , पत्नी , बच्चों में ।
- हृदय भूमि है । यिर्मयाह 4:3 – 4
- भूमि के प्रकार : पथरीली , कंटीली झाड़ीयों
  वचन और प्रार्थना का पानी नरम करता है ।
  जंगली पौध के लिए आसान ।

v) उपज के कारक

- समय : प्रतिक्षा – पानी । कार्यों द्वारा उपजाऊ बनाएं – खोदें नहीं ।
- गुणा : काटेंगे "मनुष्य जो कुछ बोता है वही ..."
  - → जो हमने बोया उससे अधिक हम काटेंगे
  - → हर फसल भविष्य के बोने के लिए बीज पैदा करती है ।
  - → शैतान हमें एक बीज देता है । यदि हम उसे बोयेंगे और उससे कहीं अधिक काटेंगे। हम तब बहुत से बीज बो कर और बड़ी फसल काटेंगे ।

vi) फ़सल की पहचान करना

- अच्छी फ़सल : यह जानें कि कौन सा बीज बोया गया तथा और अच्छे बीजों को चुनें ।
- बुरी फ़सल : पश्चाताप जंगली पौधों को मारने वाले के समान है । यह समय ले सकता है । 1 यूहन्ना 1:9

vii) अच्छी फ़सल बोना

- परमेश्वर के बीज वाली थैली से बीज चुनें / परमेश्वर का वचन
- ध्यानपूर्वक अपने वचनों को चुनें
  व्यवस्थाविवरण 30:19 ; 2 कुरिन्थियों 9:10

- भूमि को तैयार करें
  दूसरों के लिए वचन / प्रार्थना : मध्यस्थता और आत्मिक धर्मयुद्ध ।

- वचन को बोने के लिए उसे बोलें
  नीतिवचन 18:21 अय्यूब 22:28 मरकुस 11:23

- उपयुक्त कार्यों द्वारा उपजाऊ बनाएं । याकूब 2:26

ध्यान रखें कि शत्रु आपके विचारों में अपने बीज बोने की तलाश में है ।
2 कुरिन्थियों 10:5 ; फिलिप्पियों 4:8 ।।

viii) झगड़े से बचें याकूब 3:16 नीतिवचन 20:3

- झगड़े के लिए दो ही चाहिए । मना कर दें
  चक्र झूला को या झगड़े को रोक पाना कठिन होता है । नीतिवचन 15:1

- अपने को सिद्ध करने से अधिक महत्वपूर्ण इससे बचना है । मत्ती 23:12

- जब कि दूसरे झगड़ा बोते हैं, आप प्रेम बोयें ।
  रोमियों 12:21 ; फिलिप्पियों 2:3 ; गलातियों 5:14,15

- आपका जीवन साथी शत्रु नहीं है । इफिसियों 6:12

- इससे बचें : अपने क्रूस को उठाओ – तुम मर गए /गई

- जब आवश्यक हो तब झगड़े को समाप्त कर दें ।
  यह न कहें : "तुम्हारे कारण ..."
  जीभ को वश में रखें याकूब 3:2 – 8

चुपचाप तीन मिनट प्रार्थना करें ।

गलती मानें और क्षमा मांगे ।

झ. परिणाम

- 1 पतरस 3:7 एक सामर्थी, पहाड़ – हटा सकने वाली प्रार्थना जोड़ी

- मत्ती 18:19 "यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी विनती के लिए एकमत हों, तो वह मेरे स्वर्गीय पिता की ओर से उनके लिए पूरी हो जाएगी ।"

- यूहन्ना 13:35 ''यदि तुम आपस में प्रेम रखोगे, तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो।''

और फिर वे हंसी खुशी रहने लगे

अन्त